Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-1, Issue-4, Continuous Issue-4, November-December2020

साम्प्रदायिक सद्भावना के नैतिक उद्बोध
(हुतात्मसौहार्दम् एवं द्वेषदंशनम् नाटक)

डॉ. भूपेन्द्र कुमार राठौर
निदेशक–हाडौती संस्कृत अकादमी, (संस्था) कोटा
dr.bhuprndrarathor@gmail.com

संस्कृत नाटक जातीय विद्वेष एवं साम्प्रदायिक कलह की आग से जलते हुए समाज के प्रति एक तीव्र आक्रोश व्यक्त करते हैं। साम्प्रदायिक दंगे भारत के नाम पर कलंक रहे है, आज हम एक नवीन सभ्यता एवं संस्कृति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। विश्वमानवता और अन्तराष्ट्रिय सौहार्द का नैतिक उपदेश दे रहे हैं परन्तु आज भी द्वेष दंश से हम उभर नहीं पाये हैं। समाज को सामाजिक–सांस्कृतिक–धार्मिक–राजनैतिक–आर्थिक–एकता का संयोजन संस्कृत वागंमय का अनुपम निर्देशन है। **हुतात्मसौहार्दम्** एवं **द्वेषदंशनम्** भी एंकाकी नाटक है जो सामाजिक सद्भावना की ओर भारतीय जनमानस को प्रेरित एवं शिक्षित करते हैं।

'हुतात्मसौहार्दम्' नाटक नाट्यकल्प में संकलित है, इसके प्रणेता डॉ0 शिवसागर त्रिपाठी रहे हैं। दिल्ली संस्कृत अकादमी के आर्थिक सहयोग से **मातृशरणम् प्रकाशन जयपुर से 2003** में प्रकाशित 'नाट्यकल्प' एंकाकी संग्रह है। इसमें पद्मिनीरत्नम्, इंद न मम्, शरणशरणम् तथा हुतात्मसौहार्दम् एकांकी नाटक में संकलित है।[1] 'द्वेष दंशनम् तथा त्रिपथगा नाट्यकृति में संकलित है। त्रिपथगा श्री हरिदत्त शर्मा रचित एंकाकी संग्रह हैं। इसमें साक्षात्कारीयम्, वधूदहनम् तथा द्वेषदशंनम् तीन एंकाकी रूपक संकलित है। इसका प्रकाशन **1997 ई0 में Anjaney Prakashan 100, Allenganj प्रयागराज (इलाहाबाद)** से हुआ है।[2]

डॉ0 शिवसागर त्रिपाठी सहज–सरल व्यक्तित्व के स्वरूप एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। शिवसागर जी ने सदैव संस्कृत वाड्मय की समुपासाना की हैं। आधुनिक संस्कृत साहित्य को श्री त्रिपाठी की लेखनी ने समृद्ध किया है। विविध विधाओं को निरन्तर समृद्ध करते हुए आपने महाकाव्य, नाटक, कथासाहित्य, शतककाव्य, निर्वचन कोष और अनेक समीक्षा ग्रन्थों पर योगदान दिया हैं। आपकी मौलिक संस्कृत रचनाओं मे राष्ट्रभक्ति की भावना पूर्णतः परिलक्षित होती हैं। प्राणाहुतिः नाटक, नाट्यकल्प में सकलित एंकाकी, भ्रष्टाचारसप्तशती, भ्रष्टायनम्, भ्रष्टताशतकम्, स्वातन्त्रयस्वर्णजयन्तीशतकम्, आधुनिकालापशतकम्, मानवताशतकम्, प्रकिर्णशतकम् आदि रचनाएं जहाँ कालजयी भारतीय परम्परा कर अनुमोदन करती है, वहाँ वर्तमान भारत की विद्रूपताओं, अव्यवस्थाओं और विडम्बनाओं पर तीखे प्रहार करती है।[3]

नाट्यकल्प में संकलित चतुर्थ एंकाकी 'हुतात्मसौहार्दम्' में भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् कश्मीर की समस्या का वर्णन हैं। इसमें मकबूल शेरवानी के बलिदान की कथा हैं। संपूर्ण एंकाकी राष्ट्रिय एवं वैयक्तिक चेत्तना का सुन्दर उदाहरण है –

बन्दिनं मां कुरुध्वं वा, जिह्वां मे वा निकृन्तत
विचारान् तु मदीयान् भो। पाशीकर्तुं न शक्नुतः।।[4]

स्वतंत्रता प्राप्ति के मात्र तीन माह बाद 31 अक्टूबर 1947 को पाकिस्तान के इशारे पर अफ़रीदी कबायलियों ने निरीह जनता पर आक्रमण कर दिया, जिसमें अत्यधिक अत्याचार हुआ। हिन्दू–मुस्लिम एकता और देश की रक्षा का भार एक साहसी और निर्भीक युवक मीरकबूल शेरवानी ने उठाया जिसने भारतीय सेना कि आने तक हमलावरों का प्रतिरोध किया और इस प्रकार भटकाया कि वे श्रीनगर नहीं पहुंचे सके। अन्ततः भारतीय सेना ने कबायलियों को संपूर्ण घाटी से खदेड़ दिया परन्तु इसमें पूर्व शेरवानी शत्रु के हाथों पड़ गया और शहीद हो गया। यहाँ श्री त्रिपाठी लिखते हैं.....**परं शेरवानी न मृतः, नापि मर्तुम् शक्नोति। तस्यवाणी अविरता।। यतः सा स्वतंत्रताया उद्घोषः। स्वतंत्रतायाः उन्मादिनः आह्वानमेतत्। इयतींना गुलिकानां तु का कथा, सहस्त्रमपि चालिताः न तं निःशब्दं कर्तुं समर्थाः।।**[5]

साम्प्रदायिक सद्भावना एवं राष्ट्रिय एकता का उद्घोष मकबूल शेरवानी का यह कथन – **इदमेव यद् एते दस्यवोऽस्माकं शत्रवः.....काश्मीर स्वातन्त्रयस्य अपहर्तारः.....मानवताया ध्वंसका अतोऽस्माभिर्जागरूकै र्भाव्यम् एतेषां कुटिल कर्मभिःऽ, अपवित्रमन्तव्यैऽऽ, मिथ्याप्रचारैश्चऽऽऽ एतेषां जिघृक्षा विवृतमुखविषदन्तः – भंगोऽस्माभिः करणीयः, मुक्तिदायकं युद्धमनिवार्यम्। देशस्य धर्मस्थ राष्ट्रस्य च कृते प्राणानामाहवनं सौभाग्यमेव वीराणाम्।**[6] 'हुतात्मसौहार्दम् एकांकी के अनेक स्थल दर्शकों के मर्म का स्पर्श करते है। शेरवानी के अन्तिम संवाद और राष्ट्र के लिए मर मिटने का संकल्प हर भारतीय को देश पर प्राण न्योछावर की प्रेरणा देता हैं। इस एंकाकी में कवि ने देश प्रेम व भारतीय के साथ–साथ शाश्वत मानवीय मूल्यों का भी समर्थन किया है। कवि किसी वर्ग विरोध या किसी सम्प्रदाय विशेष का पक्षधर नहीं हैं, वो तो चिरन्तन शाश्वत मानव धर्म का समर्थक है। यथा ––

नेस्लामधर्मो न च यीशुधर्मो न हिन्दुधर्मो ह्यपरो न कोऽपि।।
मया गृहीतो जनता हितार्थम् मनुष्यधर्मः सुकरो विशालः।।[7]

स्वदेशत्राणार्थं सकलजनताऽसौ प्रयतताम्,8
न भूपात्सीमातिक्रमणमसकृददानवकृतम्।।
धनैः धान्यैः पूर्णं भवतु विभवैराष्ट्रमिदकम्।
उदेतु स्वातन्त्र्यं भवतु जन शान्तिश्च भुवने।।

नरीनर्तु साम्यं निखिललोक मध्ये,
स्वतन्त्रता भवन्तु प्रवरमानवा यैः।
नयं मित्रतां प्रेम सुमतिं गृहीत्वा
शुभं मानव राजमनघं प्रसार्यम्।।[9]

शहीदों की चिताओं पर लगेगें हर वर्ष मेले।
वतन पर मरने वालों का यही निशा बाकी होगा।।

इस राष्ट्रीय भावना से भी परिपूर्ण पंक्तियाँ संस्कृतमय वाणी में कवि ने इस प्रकार उद्घाटित की है :–

चितासु मेलकाः सन्तु प्रतिवर्ष हुतात्मनाम्।
देशे ऽसून्त्यक्तुकामानामेतद् भवतु चिहनकम्।।[10]

अतः स्पष्ट है कि 'हुतात्मासौहार्दम्' एकांकी रूपक कश्मीर की गौरवगाथा राष्ट्रिय एकता–अखण्डता एवं साम्प्रदायिक सौहार्द का दिग्दर्शक हैं। भारत विभाजन के समय कबायलियों की घुसपैठ और कश्मीरी प्रदेश की समृद्धि का वर्णन करते हुए अपनी राष्ट्रभूमि के प्रति गौरव की भावना को जगाने का कवि ने प्रयास किया हैं।

इसी प्रकार प्रो0 हरिदत्त शर्मा विरचित त्रिपथगा में संकलित द्वेषदंशनम् संस्कृत नाटक जातीय विद्वेष एवं साम्प्रदायिक कलह की आग से जलते हुए समाज के प्रति एक तीखा आक्रोश व्यक्त किया करता है। कवि का यह कथन वास्तव में सत्य हैं। साम्प्रदायिक सौहार्द लेखन और भाषण से नहीं आत्मिक एकता से होता हैं। रूपक के प्रारम्भ में सूत्रधार विविधता में एकता इस विशेषता को निर्देशित करते हुए कहता है कि – **जयति विविधवर्णैः जातिभिः वर्गभेदैः। अधिगत बहुरूपों ह्यार्यदेषों दृढात्मा।।**[11]

इस नाटक के पात्र गांधीवादी विचारक, कवि, उच्चशिक्षित तथा विविध धर्मो से युक्त है। जो भारतीय समाज को इस समस्या से मुक्ति का एक नवीन संदेश दे रहे हैं। ताहिरा, शाहिद और अफजल जो एक मुस्लिम परिवार से सम्बन्ध रखते है, उनका मित्र परिवार शिवदास के प्रति यह कथन मानवीय एकता की भावना का संचार करता है।

ताहिरा – बालकोऽयम् । नावगच्छति सर्वम्। (अफजलं प्रति)
वत्स! शिवदासः तस्य सकलं कुटुम्बकम् च अस्माकं मित्रम्।
सः स्वप्नेऽपि अस्माभिः सह शत्रुवदाचरणं न करिष्यति।
अफजलः – तदा कः करोति हिंसायुतमुपद्रवम्। अस्माकं विद्यालये 'डिसूजा' पदारिणा अद्यः प्रातः प्रार्थना सभां सम्बोधयन् कथिंत यद् ईश्वरेण सर्वे मनुष्याः समानरूपेण निर्मिताः। वयं सर्वे तस्य सन्ततयः वयं समे बान्धवः भ्रातरः प्रेम्णा.....।
शाहिद :– सत्यमेवोपदिष्टं पादरिणां । परम् ईश्वरीय सन्ततिषु । केचिद् दानवा अपि भवन्ति। ये परपीडने, हिंसाकरणे, रक्तपाते एव सुखं लभन्ते।[12]

रूपक के प्रथम दृश्य में हिन्दू–मुस्लिम दंगे से दुखी दो गान्धीवादी विचारधारा के समर्थक श्रुतिशील और सत्यसेन का कहना है कि उपद्रव और आतंक फैलाने वाले लोगों को क्या प्राप्त होता हैं ? आंतकवादी द्वेष में हत्याएं कर देते है, उन्हे क्या मिलता हैं ? पंजाब में हत्या करने से लोगों को क्या मिला है ? गांधी के देश में अब अहिंसा के स्थान पर हिंसा का ताण्डव नृत्य हो रहा हैं। महात्मा गांधी ने भारत को सत्य एवं अहिंसा जैसी दो अमोध शक्तियों से ही अंग्रेज दासता से मुक्त कराया था सम्पुर्ण देश उनके साथ था। आज भी राष्ट्र राष्ट्रपिता के संबोधन से उन्हें नमन करता हैं।

मुस्लिम बालिका शकीला का संस्कृत व हिन्दू संस्कृति के विषये का ज्ञान सौमनस्य प्रेरक एवं प्रगतिवादी विचारधारा का द्योतक है। भारत के पड़ोसी देश भी यदि इससे शिक्षा ग्रहण करें तो वहां की प्रजा को अमन चैन की प्राप्ति हो सकेगी क्योंकि संस्कृत मानवीय कल्याण का उन्नतपथ हैं। जो **वसुधैवकुटुम्बबकम्, अहिंसापरमोधर्मः, सर्वेभवन्तु सुखिनः** आदि कल्याणकारी उपदेशों को देकर विशाल मानवीय विचारधारा का निर्माण करती हैं।

एकांकी के तृतीय दृश्य में एक मुस्लिम व हिन्दु मित्र शनिवार के अवकाश को शतरंज खेलने व एक–दूसरे से मिलने के साथ व्यतीत करना चाहते है। इस प्रसंग में शिवदास अपने मित्र शाहिद के घर जाता हैं। परन्तु दंगा होने पर जातीय संघर्ष में वह उपद्रवकारियों का शिकार बन जाता है। किसी तरह शाहिद के घर पहुंचकर वह अपनी जान बचाता है परन्तु उसे अपनी

पत्नी क विषये में चिन्ता है। शाहिद इस सन्दर्भ में कहता है– **मदीयेन स्कूटरयानेन सुरक्षितश्चलिष्यसि। त्वां प्रापयित्वा शीघ्रमहं निर्वतयिष्यें।**[13] कितना पारस्परिक सौहार्द हैं दोनों की विचारधारा में जो दोनों एक दूसरे के लिए समर्पित हैं।

एकांकी के चतुर्थ दृश्य में शिवदास के घर मे उत्पन्न चिन्ता को दिखाया है क्योंकि दो समुदायों में दंगा हो चुका है उसकी पत्नी व पुत्री चिन्तित हैं। रात की 9 बजे तक भी शिवदास जब घर नहीं पहुंचा तो उसकी पुत्री शिप्रा शाहिद के मुसलमान होने से उसके प्रति बाल सहज शंका व्यक्त करती हैं।

दूसरी ओर जब माँ–बैटी सड़क पर देखती है तो दहल जाती है क्योंकि वह दृश्य तो इंसान–इंसान के भक्षण का हैं जहाँ एक दूसरे पर मरने–मारने का भूत सवार हैं वे परिणाम की भयावहता को नहीं जानते। उन्हे यह भी मालुम नहीं इस अमानवीयता का कहर कितने परिवारों के लिए घातक होगा। पुत्र के खो देने पर माँ की पीड़ा, पति के वियोग में पत्नी के सिन्दुर का अनौचित्य, माता–पिता से वंचित बालकों का कष्ट, रक्षासूत्र रहित बहिन की अनवरत् अश्रुधारा आदि। शहर में कर्फ्यू लगा दिया गया है। पुलिस अनके लोगों को पकड़ ले जा रही हैं। इस दृश्य का अपर पक्ष डफरिन अस्पताल का हैं। जहाँ शिवदास शाहिद के साथ लौटते वक्त बम विस्फोट में घायल हो जाता है। सुशीला रोती हुई बेटी के साथ शीघ्र अस्पताल चल देती है। दंगे से उत्पन्न भयावहता तथा दंगे के कारण लगे कर्फ्यू की त्रासदी का जीवन वर्णन है। अन्तिम दृश्य मे नगर के मध्य स्थित कोतवाली में विभिन्न राजनेता, पत्रकार, अधिकारी और सामाजिक कार्यकर्ता आदि को इस नरसंहार के विषय पर आरोप प्रत्याारोप के मध्य विश्लेषण करते हुए दिखाया गया हैं जो निष्कर्ष रहित विश्लेषण है।

द्वेषदंशनम् एकांकी रूपक में श्री शर्मा ने समाज में व्याप्त वैमनष्य को दूर करने का प्रयास किया है। मानव–मानवता के विनाश में किस तरह तत्पर हो जाता हैं। और दुसरे को विनाश कर सृष्टि के विपरीत कार्य करता हैं, वास्तव में रूपककार की लेखनी मानवीय समस्याओं का सूक्ष्म अंकन करने में सफल रही हैं। साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधा है। प्रायः सभी सम्प्रदाय राष्ट्रीय हितों की अपेक्षा केवल अपने–अपने साम्प्रदायिक हितों को पूरा करने में जूटे हुए है। इसमें राष्ट्रीय एकता खतरे में पड़ गई है।

इस प्रकार संक्षेप मे वर्णित है कि समाज में शान्ति की स्थापना सरकार सहित भारतीय जनमानस का प्रमुख दायित्व है। इसी संदर्भ में रूपकद्वयकारों ने संस्कृत वाड्.मय को आधार बनाकर साम्प्रदायिक सद्भावना के विषय में महत कार्य किया हैं। 'हुतात्मसौहार्द' एकांकी में प्रो0 शिवसागर जी यह बताने को सफल रहे है कि भारत माता की रक्षा करना प्रत्येक भारतीय का स्वधर्म है। जाति–सम्प्रदाय आदि मानव जीवन का दृष्टिकोण हो सकते है परन्तु देश भक्ति के समक्ष ये औचित्यहिन हैं। यही कारण है कि मकबूल शेरवानी अपने प्राणों का अर्पण मातृभूमि की सेवा में समर्पित कर देता है। वह भारत माँ का महान सपूत आज भी देहरहित भारतीय जनमानस में विद्यमान है। नाटककार का यह कथन –

प्रकटयति यदि शत्रुमातृ भूमौ, सुवीरः। प्रथयति निजशक्तिं स्वीयप्राणाञ्जुहोति।।
भवतु यदि कदाचिद् भारते बाह्ययुद्धं। जनयतु ननु माता कोटिशः शेरवानीन्।।

उसकी अजर–अमरता का सूचक है। प्रो0 हरिदत्त शर्मा ने भी द्वेषदंशनम् रूपक में मानवता की सुरक्षा का संदेश दिया है। प्रत्येक मानव का ध्येयवाक्य सदैव माव जीवन की सुरक्षा होना चाहिए। यह तभी सफल होगा जब मानव घृणा छोड़कर आत्मदर्शन मे विश्वप्रेम की ओर अग्रसर होगा–

यस्युसर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति। सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते।।

संदर्भ :–

1. नाट्यकल्प (भूमिका) पृ.–3।
2. प्रिपथगा (भूमिका) पृ.–2।
3. अर्वाचीन संस्कृत साहित्य के नवीन आयाम पृ–177।
4. नाट्यकल्प पृ–73।
5. नाट्यकल्प पृ–73।
6 नाट्यकल्प पृ–58।
7 प्राणाहुतिः पृ–24।
8 नाट्यकल्प पृ–75।
9. नाट्यकल्प पृ–75।
10 नाट्यकल्प पृ–75।
11 त्रिपथगा पृ–59।
12. त्रिपथगा पृ–66।
13 त्रिपथगा पृ–69।